Gurukul International Multidisciplinary Research Journal (GIMRJ)*with* International Impact Factor 8.357
Peer Reviewed Journal
https://doi.org/10.69758/GIMRJ/2505I5VXIIIP0068

e-ISSN No. 2394-8426
Monthly Issue
MAY-2025
Issue–V, Volume–XIII

रेखाचित्र-स्वरूप और विश्लेषण 'महादेवी वर्मा के रेखाचित्र'

मनोज शर्मा
पी एच डी शोधार्थी (हिंदी)
दिल्ली विश्वविद्यालय
9868310402
mannufeb22@gmail.com

सारांश

साहित्य में गद्य-लेखन का आरंभ अर्वाचीन युग से माना जाता है. रेखाचित्र की गणना गद्य की नव्यत्तम विधाओं में की जाती है. पश्चिम से आई इस विधा को अंग्रेजी में 'स्केच' कहा गया है हिंदी में इसे 'रेखाचित्र' नाम दिया गया है. रेखाचित्र में किसी विशेष व्यक्ति के चरित्र स्वभाव और गुणों का कलात्मक वर्णन रहता है. व्यक्ति ही क्यों, किसी घटना या दृश्य को लेकर जो शब्द-चित्र तैयार किया जाता है, उसे भी प्राय: यही संज्ञा दी जाती है. वाग्विद्ग्धता और यथार्थवादिता किसी भी स्केच या रेखाचित्र की विशेषता होती है. जिस प्रकार आधुनिक समाज के अत्यंत संश्लिष्ट संगठन की अभिव्यक्ति करने वाली सवाक चित्र और उपन्यास कलाएं विकसित हुई उसी प्रकार उसकी द्रुतगामिता की अभिव्यक्ति करने वाली आधुनिक कहानी, रेखाचित्र और रिपोर्ताज की कलाओं का विकास हुआ. 'रेखाचित्र' विषय का दूरस्थ (डिस्टेंट) और विषय से अलगाव लिए हुए (डिटेच्ड) चित्र होता है. रेखाचित्र के विषय में (आब्जेक्ट) के साथ लेखक का निकट संपर्क आवश्यक नहीं. जैसे चित्रकार किसी व्यक्ति, स्थल या वास्तु को देखकर उसके साथ बिना आत्मिक लगाव स्थापित किये हुए भाव से 'स्केच' रेखाचित्र प्रस्तुत कर देता है.

बीज शब्द - गद्य, स्केच, कलात्मकता, नवीन विधा,व्यक्ति विशेष, चरित्र, शब्दचित्र

शोध आलेख

हिंदी में गद्य की नवीन विधाओं में 'रेखाचित्र' का प्रमुख स्थान है. जब परम्परागत विधाएं कलाकार की भावनाओं की सफल अभिव्यक्ति नहीं कर पाती तो नवीन विधाओं की खोज की जाती है . इसी खोज के परिणामस्वरूप रेखाचित्र, एकांकी, रिपोर्ताज, डायरी आदि नवीन विधाओं का प्रयोग किया गया है. आधुनिक जीवन की परिस्थिति एवं व्यस्तता ने साहित्यकारों को इस नवीन विधा को अपनाने की प्रेरणा दी है. आरंभ में इसकी कहानी, निबंध आदि के साथ ही सम्मिलित कर लिया जाता था. इस शताब्दी के तीसरे-चौथे दशक से इसका स्वतंत्र विकास हुआ है.

रेखाचित्र कहानी की अपेक्षा एक ठोस और यथार्थवादी भूमि पर निर्मित होता है. उसमें कल्पना का आश्रय कम लिया जाता है. लेखक उन व्यस्त क्षणों में रेखाचित्र का निर्माण करता है जब अपनी भावनाओं को अलंकृत रूप में प्रस्तुत करने का उसके पास कोई अवकाश नहीं होता. यथार्थ परिस्थितियों से प्रभावित होकर लेखक अपने अनुभव को सीधे शब्दों में तीव्रता के साथ व्यक्त कर देना चाहता है. ऐसी विधाओं का संक्रातिकाल में होता है.

यूरोप में औद्योगिक क्रांति के युग में इन विधाओं का विकास हुआ. इसी प्रकार भारत बीसवीं शताब्दी में तृतीय दशक में आर्थिक उथल-पुथल के समय रेखाचित्रों का अविर्भाव हुआ.

इस विधा की मूल विशेषता है, अपने संपर्क में आये किसी सामान्य पत्र(वह पात्र मनुष्य तो हो ही सकता है, मनुष्येतर प्राणी या वास्तु भी हो सकती है) के जीवनांशों का अंकन. इस अंकन में लेखक की दृष्टि पात्र के बाह्य रूपाकार पर अधिक रहती है.

रेखाचित्र शब्द का प्रयोग हिंदी में रेखाओं से बने हुए चित्र के लिए होता है. गुजरती में रेखाचित्र का प्रयोग अंग्रेजी के 'Thumb -nail sketch' के लिए होता है. मलयालम में 'तुलिका चित्र' शब्द भी चलता है. 'रेखाचित्र' के अर्थ में 'व्यक्तिचित्र', 'चरित-लेख' आदि अन्य शब्द भी हिंदी में चलते हैं, परन्तु 'रेखाचित्र' ही सबसे अधिक उपयुक्त एवं सफल अर्थवाहक लगता है.

ए हैंड बुक टू लिटरेचर के अनुसार " किसी एक दृश्य, चरित्र या घटना को प्रस्तुत करने वाली सरल और सुगठित लघु रचना को रेखाचित्र माना गया है. इसकी सरलता के कारण इसमें कथानक अथवा चरित्र-चित्रण विस्तृत नहीं होता. प्रारंभ में रेखाचित्र को किसी रचना का पूर्व रूप या उसका ढांचा मात्र माना जाता था. किन्तु अब रेखाचित्र में किसी ऐसी रचना का आशय होता है, जिसमें चरित्र अथवा वर्णन का प्राधान्य हो."

रेखाचित्र में व्यक्ति, घटना या दृश्य का अंकन होता है. डॉ नगेन्द्र ने रेखाचित्र को चित्रकला के समीप मानते हुए परिभाषित किया है.

"चित्रकला का यह शब्द साहित्य में आया तो इसकी परिभाषा भी स्वभावत: इसके साथ आई, अर्थात् रेखाचित्र ऐसी रचना के लिए प्रयुक्त होने लगा जिसमें रेखाएं हों पर मूर्त रूप अर्थात् उतार-चढ़ाव आदि न हो, तथ्यों का उदघाटन मात्र हो."

रेखाचित्र का स्वरूप का विवेचन करते हुए डॉ गोविन्द त्रिगुणायत ने कहा है कि "रेखाचित्र साहित्यकार के साथ ही चित्रकार भी होता है. जिस प्रकार चित्रकार अपनी युलिका के कलामय स्पर्श से चित्र-पटल पर अंकित विश्रृंखल रेखाओं में से कुछ उभरी हुई रेखाओं को सवार कर एक अजीब रूप प्रदान कर देता है, उसी प्रकार रेखाचित्रकार मन:पटल पर विश्रृंखल रूप से बिखरी हुई शत-शत स्मृति रेखाओं में से उभरी हुई रमणीय रेखाओं को अपनी कला की तुलिका से स्वानुभूति के रंग रंजित कर जीते जागते शब्द-चित्र परिणत कर देता है. यही शब्द-चित्र रेखाचित्र कहलाता है."

रेखाचित्र अधिकांशत: किसी व्यक्ति का चित्रकार द्वारा रंगों द्वारा नहीं, अपितु साहित्यकार द्वारा शब्दों से बनाया गया एक स्थिर-चित्र है. इस प्रकार चित्र में किसी पत्र की किन्हीं विशेषताओं को चुने हुए शब्दों के द्वारा उभारा जाता है. संक्षिप्तता, सरलता, सजीवता आदि इसकी विशेषताएं हैं और वह कहानी से मिलती जुलती भ्रमवश मान ली जाती है. वास्तव में 'रेखाचित्र' एक वैयक्तिक कला है, जिसमें "तटस्थ भाव से, निर्लिप्त रहकर किसी व्यक्ति, या सन्दर्भ का अंकन शब्दों के स्वल्प प्रयोग-द्वारा उसकी विशिष्टता को उजागर करते हुए, हृदय-परिष्कार, धारणा-परिवर्तन, लोक-हृदय की निर्मिति, संवेदनशीलता का उन्मेष आदि लक्ष्यों को दृष्टिपंथ में रख कर किया जाता है."

प्रारंभ में रेखाचित्र को किसी रचना का पूर्व रूप या उसका ढांचा मात्र माना जाता था, किन्तु अब रेखाचित्र से ऐसी किसी रचना का आशय होता है जिसमें चरित्र अथवा वर्णन प्राधान्य हो. रेखाचित्र-विधा के तत्वों की बात

की जाए तो अधिकांश समीक्षकों ने निम्नलिखित तत्वों को प्रधानता दी है. (1) विषय (2) सरसता (3) चित्रात्मकता (4) लेखक का निजीपन (5) संस्मरनात्मकता (6) भाषा शैली (7) उद्देश्य.

इन्हीं तत्वों को आधार मानते हुए रेखाचित्र के कुछ मुख्य उपकरण माने जा सकते हैं-

चित्रात्मकता या बिम्बात्मकता, एकात्मकता, तटस्थता, संक्षिप्तता

इसी तरह रेखाचित्र के प्रकारों की बात की जाए तो रेखाचित्र कई किस्म के हो सकते हैं.यथा- मनोवैज्ञानिक रेखाचित्र

ऐतिहासिक रेखाचित्र

तथ्य प्रधान या घटना-प्रधान रेखाचित्र

वातावरण प्रधान रेखाचित्र

प्रभाववादी-प्रतीकवादी रेखाचित्र

हास्य-व्यंग्य-प्रधान रेखाचित्र

व्यक्ति-प्रधान रेखाचित्र

आत्मपरक रेखाचित्र

रेखाचित्र के प्रकारों के साथ इन्हें कुछ वर्गों में बांटा जा सकता है जैसे- भावनात्मक, प्रकृतिपरक, समस्यामूलक, संस्मरणात्मक, सांस्कृतिक

इनके अतिरिक्त ये व्यक्ति-प्रधान, वस्तु-प्रधान आदि हो सकते हैं.

महादेवी वर्मा के रेखाचित्र

महादेवी वर्मा ने रेखाचित्र के विषय में लिखा है- "चित्रकार अपने सामने रखी वस्तु या व्यक्ति या रंगीन चित्र जब कुछ रेखाओं के इस प्रकार आंक देता है कि उसकी मुद्रा पहचानी जा सके तब उसे हम रेखाचित्र की संज्ञा देते है." साहित्य में भी साहित्यकार कुछ शब्दों में ऐसा चित्र अंकित कर देता है जो उस व्यक्ति या वस्तु का परिचय दे सके,परन्तु दानों में अन्तर होता है.

हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध रेखाचित्रकारों में महादेवी वर्मा, श्रीराम शर्मा, बनारसीदास चतुर्वेदी, सामवृक्ष बेनीपुरी, वृंदावनलाल वर्मा, प्रकाशचंद्र गुप्त, कन्हैयालालमिश्र, नारायण टंडन, जयनाथ नलिन, बेढब बनारसी, अमृतलाल नागर, देवराज दिनेश, मोहनलाल गुप्ता, सत्यवती मलिक, जगदीशचंद्र माथुर, भगवतीचरण वर्मा आदि नाम उल्लेखनीय है.

महादेवी वर्मा एक सफल रेखाचित्रकार, कवयित्री, और विचारक है. उन्होंने कई रेखाचित्र लिखें हैं जिनमें नीलकंठ मोर, घीसा, सोना, गौरा आदि काफी प्रसिद्ध है. मानव एक श्रेष्ठ प्राणी होने पर भी पशुओं के प्रति उसका व्यवहार सराहनीय नहीं हैं.

'अतीत के चलचित्र'(1941) की भूमिका में महादेवी जी ने लिखा है "इन स्मृति चित्रों में मेरा जीवन भी आ गया है स्वाभाविक भी था. अंधेरे की वस्तुओं को हम अपने प्रकाश में धुंधली या उजली परिधि मे ही लाकर देख पाते

हैं. उसके बाहर हों फिर वे अनन्त अंधकार के अंश हैं. मेरे जीवन की परिधि के भीतर खड़े होकर चरित्र जैसे परिचय दे पाते हैं. वह बाहर रूपांतरित हो जाएगा.

"जो हमें प्रिय है,वह हमारे हित के परिवेश में ही प्रिय है और अप्रिय है, वह हमारे अहित के परिवेश में ही अपनी स्थिति रखता है. यह अहित, प्रत्यक्ष कर्म से सूक्ष्म भाव-जगत् तक फैला रह सकता है. हमारे दर्शन, साहित्य आदि विविध साधनों से प्राप्त संस्कार, हमें अपने परिवेश के प्रति उदार बनाने का ही लक्ष्य रखते हैं पर, मनुष्य का अहम प्रायः उन साधनों से विद्रोह करता रहता है. अपने अग्रजों सहयोगियों के सम्बन्ध में, अपने-आप को दूर रखकर कुछ कहना सहज नहीं होता. मैंने साहस तो किया है; पर ऐसे स्मरण के लिए आवश्यक निर्लिप्तता या असंगता मेरे लिए संभव नहीं है. मेरी दृष्टि के सीमित शीशे में वे जैसे दिखाई देते हैं, उससे वे बहुत उज्जवल और विशाल हैं, इसे मानकर पढ़ने वाले ही उनकी कुछ झलक पा सकेंगे"

इन गद्यात्मक निबन्धों को पूर्ण रूप से न तो संस्मरण की कोटि में रखा जा सकता है और न पूरी तरह रेखाचित्र ही कहा जा सकता है. ये निबन्ध लेखिका के सम्पर्क में आए व्यक्तियों को स्मरण करके लिखे गए हैं, अतः ये संस्मरण की कोटि में भी रखे जा सकते हैं, साथ ही स्मरण किए गए उन व्यक्तियों को सुनिश्चित, ठोस, नुकीला और प्रभावशाली व्यक्तित्व प्रदान करने से इन्हें रेखाचित्र भी कहते हैं. वैयक्तिक संस्पर्श न्यूनाधिक दोनों विधाओं में विद्यमान रहता है . यथार्थ का आधार भी दोनों **(संस्मरण और रेखाचित्र)** विधाओं का अनिवार्य तत्त्व है, क्योंकि दोनों ही विधाएँ जीवनी मूलक हैं. इसी आधार पर समीक्षक महादेवी वर्मा की इस प्रकार की रचनाओं को संस्मरणात्मक रेखाचित्र अथवा रेखाचित्रात्मक संस्मरण की संज्ञा देना अधिक उचित मानते हैं.

"गरमियों में जब मैं दोपहर में काम करती रहती तो गिल्लू न बाहर जाता न अपने झूले में बैठता. उसने मेरे निकट रहने के साथ गरमी से बचने का एक सर्वथा नया उपाय खोज निकाला था. वह मेरे पास रखी सुराही पर लेट जाता और इस प्रकार समीप भी रहता और ठंडक में भी रहता. गिलहरियों के जीवन की अवधि दो वर्ष से अधिक नहीं होती, अतः गिल्लू की जीवन यात्रा का अंत आ ही गया. दिन भर उसने न कुछ खाया न बाहर गया. रात में अंत की यातना में भी वह अपने झूले से उतरकर मेरे बिस्तर पर आया और ठंडे पंजों से मेरी वही उँगली पकड़कर हाथ से चिपक गया, जिसे उसने अपने बचपन की मरणासन्न स्थिति में पकड़ा था. पंजे इतने ठंडे हो रहे थे कि मैंने जागकर हीटर जलाया और उसे उष्णता देने का प्रयत्न किया. परंतु प्रभात की प्रथम किरण के स्पर्श के साथ ही वह किसी और जीवन में जागने के लिए सो गया."

महादेवी वर्मा के रेखाचित्रों में करुणा की प्रधानता है तथा ऐसे दीन -हीन, दुःखी, पीड़ित पात्रों को वे अपने रेखाचित्र का विषय बनाती हैं जो पाठकों की पूरी सहानुभूति प्राप्त कर लेते हैं. विधवा युवतियाँ, विमाता द्वारा सताये बच्चे, दीन-हीन किन्तु कर्मठ पात्र उनके रेखाचित्रों के विषय बने हैं. महादेवी जी के रेखाचित्रों में सूक्ष्म

निरीक्षण की प्रवृत्ति है, पात्र का पूरा चित्र है, उसकी करुण दशा का चित्रोपम वर्णन है. महादेवी जी की भाषा सशक्त है तथा उसमें चित्रोपमता का गुण विद्यमान है. आवश्यकतानुसार वे अपनी शैली बदलती रहती हैं. सरल, सहज, संस्कृतनिष्ठ प्रवाहपूर्ण शब्दावली उनकी भाषा की अन्यतम विशेषता है.

"भक्तिन का दुर्भाग्य की उससे कम हठी नहीं था, इसी से किशोरी से युवती होते ही बड़ी लड़की भी विधवा हो गई. भइयहू से पार न पा सकने वाले जेठों और काकी को परास्त करने के लिए कटिबद्ध जिठौतों ने आशा की एक किरण देख पाई. विधवा बहिन के गठबन्धन के लिए बड़ा जिठौत अपने तीतर लड़ानेवाले साले को बुला लाया, क्योंकि उसका हो जाने पर सब कुछ उन्हीं के अधिकार में रहता है. भक्तिन की लड़की भी माँ से कम समझदार नहीं थी, इसी से उसने वर को नापसन्द कर दिया. बाहर के बहनोई का आना चचेरों भाईयों के लिए सुविधाजनक नहीं था, अत: यह प्रस्ताव जहाँ-का-तहाँ रह गया. तब वे दोनों माँ-बेटी खूब मन लगाकर अपनी सम्पत्ति की देख-भाल करने लगीं और 'मान न मान मैं तेरा मेहमान' की कहावत चरितार्थ करनेवाले वर के समर्थक उसे किसी-न-किसी प्रकार पति की पदवी पर अभिषिक्त करने का उपाय सोचने लगे."

महादेवी वर्मा ने भारतीय संदर्भों मे स्त्री-जीवन को समझने और समझाने का आरंभिक प्रयास किया. उन्होंने अपने रेखाचित्रों द्वारा न केवल 'स्त्री उपेक्षिता' की पहचान की अपितु 'स्त्रियों की पराधीनता' के कारणों पर भी विस्तार से चर्चा की. बुनियादी तौर पर स्त्री विमर्श 'पहचान का संकट' से अधिक 'संकट की पहचान' है. महादेवी वर्मा ने स्त्री विमर्श पर अधिकतर सवाल उठाये और अपनी रचनाओं में सामाजिक-सांस्कृतिक विचार अभिव्यक्त किया. 'स्मृति की रेखाएँ' स्त्री संदर्भ में एक रचनात्मक अभिलेख है, जो अब भी भारतीय समाज के लिए प्रासंगिक है. स्त्री-जीवन में व्याप्त दु:ख, दैन्य और उत्पीड़न को उन्होंने शब्दों की रेखाओं से चित्रित किया है. इन रेखाचित्रों का सम्बन्ध महादेवी के जीवन से भी है. कहना न होगा कि 'स्मृति की रेखाएँ' के स्त्री-पात्र महादेवी की स्त्री दृष्टि का प्रतिनिधित्व करते हैं. भक्तिन, बिबिया और गुंगिया 'स्मृति की रेखाएँ' में निम्नवर्गीय स्त्री-पात्र हैं, जो इस सामाजिक व्यवस्था में शोषण का शिकार हैं. ये स्त्री-पात्र इतने कमजोर नहीं हैं बल्कि इस व्यवस्था में स्त्री होना ही उनका सबसे बड़ा दुर्भाग्य है. महादेवी के रेखाचित्र 'स्मृति की रेखाएँ' की निम्नवर्गीय स्त्री पात्रों के माध्यम से स्त्रियों की स्थिति पर अध्ययन करते हुए उनके त्रासद जीवन के कुछ कारणों को परखने का प्रयास किया गया है. महादेवी के रेखाचित्र में खासकर निम्नवर्गीय स्त्रियों की ऐसी स्थिति बनने के कई सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक कारण हैं. भारतीय समाज में स्त्रियों की ऐसी स्थिति के लिए आर्थिक स्वतंत्रता का अभाव, स्त्री-पुरुष संबंध: विवाह और वैधव्य तथा सामाजिक पूर्वग्रह - जिसमें कि स्त्री को ही दोषी माना जाता है - को मुख्य कारण के रूप में पेश करना अनुचित नहीं होगा. इन मुख्य कारणों से महादेवी के निम्नवर्गीय स्त्री पात्र जीवन भर समाज में शारीरिक तथा मानसिक शोषण का शिकार हुई हैं और उनकी पूरी जिन्दगी में स्त्री होने की नकारात्मक छवि सदैव बनी रही है. हालांकि इन रेखाचित्रों

की एक सीमा यह भी है कि इनमें केवल निम्न या निम्न-मध्यवर्गीय स्त्रियों का चित्रण किया गया है. मध्यवर्गीय अथवा उच्च वर्गीय स्त्रियों का चित्रण उनके रचना संसार में देखने को बहुत कम मिलता है.

महादेवी जी का रचना क्षेत्र अत्यंत विस्तृत है जिसमें पद्य के साथ साथ गद्य अपने वैचारिक विस्तार और परिपक्वता को लिए हुए है जिनमें जीवन का संपूर्ण वैविध्य समाया हुआ है. महादेवी जी सदैव सामाजिक एवं राजनीतिक रूप से सचेत एवं मुखर रही हैं और उनके व्यक्तित्व का यह पहलू उनकी रचनाओं में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है. महादेवी जी ने अपनी रचनाओं एवं उनके पात्रों के माध्यम से सामाजिक एवं राजनीतिक असमानता, रूढ़ियों एवं परंपरा से चली आ रही अलोकतांत्रिक मूल्यों के खिलाफ अपना विरोध दर्ज किया लेकिन उनकी भाषा की मधुरता और कोमलता वैसी ही बनी रही जिसके कारण अनामिका जी महादेवी जी कि भाषा को ' सविनय अवज्ञा ' की भाषा भी कहती हैं.महादेवी जी को ज्यादातर पीड़ा एवम् करुणा की कवियित्री के रूप में ही याद किया गया है जबकि उन्हें उनके मूल विद्रोही तेवर एवम् सजग चेतना से संपन्न व्यक्तित्व के रूप में ही याद किया जाना चाहिए.

संदर्भ सूची

1 शर्मा हरवंशलाल, हिंदी-रेखाचित्र, मेहरा आफसेट प्रेस- 1969 आगरा

2 असद,माजदा,गद्य की नई विधाओं का विकास,ग्रंथ अकादमी,1986, दिल्ली

3 घोष,श्याम सुंदर, साहित्य के नये रूप, कृष्णा ब्रदर्स, 1969 अजमेर

4 मिश्र भागीरथ, काव्यशास्त्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन,1962 अजमेर

5 नगेन्द्र, विचार और विश्लेषण तथा नगेन्द्र के सर्वश्रेष्ठ निबंध

6 वर्मा वीरपाल, हिंदी रिपोर्ताज, कुसुम प्रकाशन-1987 मुजफ्फरनगर

7 हरिमोहन, साहित्यिक विधाएं: पुनर्विचार, वाणी प्रकाशन-2005 दिल्ली

8 वर्मा, महादेवी, अतीत के चलचित्र, भारती भंडार -1941 इलाहबाद

9 वर्मा, महादेवी, स्मृति की रेखाएं, भारती भंडार इलाहबाद

10 वर्मा, महादेवी, पथ के साथी, भारती भंडार-1956 इलाहबाद

11 सं.उपाध्याय, विशवंभर, हिंदी में रेखाचित्र, आलोचना विशेषांक-1966

12 https://samkaleenjanmat.in/binda-a-sketch-by-mahadevi-verma/-(30-03-2023) 7.13pm